Dr. Sadhvi Devp
Prof. & Dean - Faculty
Humanities & Ancient S

पतंजलि विश्वविद्यालय
University of Patanjali

उत्तराखण्ड विधान मण्डल द्वारा पारित पतंजलि विश्वविद्यालय अधिनियम संख्या 4, वर्ष 2006 के अन्तर्गत स्थापित
Established by Uttarakhand State Legislature Under the University of Patanjali Act No. 4, Year 2006

पत्रांक (Ref.) : UOP/Dean/H&AS/2024/51

दिनांक (Date) : 07/11/2024

To

The Vice-Chancellor
University of Patanjali
Haridwar

Subject: **Regarding your approval for organizing one-day National Conference and one-week Vocational Training Program will be conducted by the Department of Philosophy & Sanskrit, University of Patanjali, in financial collaboration with Central Sanskrit University, New Delhi.**

Sadar Pranam,

We would like to inform you that the Department of Philosophy and Sanskrit have applied for financial assistance and approved ₹1,00,000/- each from the Central Sanskrit University, New Delhi, to organize two events - A one-day National conference on **'The Role of Indian Philosophy in World Peace'** and one-week Vocational Training Program on **'Svāvalamban Svāsthya-samrakṣaṇ'**. The tentative dates of the events for your kind approval are 18 November 2024 for the conference and 18-23 November 2024 for the Vocational Training Program.

We have received ₹75,000/- each on our university's account for above the same and the remaining amount will be credited after submitting the documents to CSU. Hence, we also request your approval for the utilization of the funds for organizing the events successfully. We look forward to your kind approval.

Dhanyavādāh

Dr. Sadhvi Devpriya
Dean,
Faculty of Humanities and Ancient Studies,
University of Patanjali, Haridwar.

पतंजलि विश्वविद्यालय, हरिद्वार

पत्रांक: UOP/PVC/2024/VM-1 दिनांक: 16.11.2024

कार्यालय आदेश

मानविकी एवं प्राच्य विद्या अध्ययन संकाय के अर्न्तगत दर्शन विभाग एवं संस्कृत विभाग के द्वारा दिनांक 18 नवम्बर, 2024 को एक दिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन किया जा रहा है। सम्मेलन में माननीय कुलपति महोदय परम श्रद्धेय आचार्य जी का आशीर्वाद सभी को प्राप्त होगा।

सम्मेलन का विवरण निम्न प्रकार है :

शीर्षक : विश्वशान्तिस्थापने भारतीयदर्शनानां योगदानम्

स्थान: मिनी ऑडिटोरियम, प्रशासनिक भवन दितीय तल

समय: प्रात: 09:30 बजे

नोट: दर्शन एवं संस्कृत विभाग के शिक्षक, शोधार्थी एवं छात्र/छात्राओं की उपस्थिति अनिवार्य है। अन्य संकायों/विभाग के शिक्षक, शोधार्थी एवं विद्यार्थी भी सम्मेलन में सादर आमंत्रित हैं। वे सम्मेलन में इस तरह प्रतिभाग करें जिससे कि उनकी कक्षाएं सुचारू रूप से संचालित होती रहे।

संलग्न - सम्मेलन विवरण।

(प्रो. मयंक कुमार अग्रवाल)
प्रति-कुलपति

प्रतिलिपि: सूचनार्थ एवं आवश्यक कार्यवाही हेतु प्रेषित।

प्रो. मयंक कुमार अग्रवाल
प्रति-कुलपति
पतंजलि विश्वविद्यालय, हरिद्वार

1. निजी सचिव कुलपति, माननीय कुलपति महोदय के सादर सूचनार्थ।
2. समन्वयक, आन्तरिक गुणवत्ता आश्वासन केन्द्र, पतंजलि विश्वविद्यालय।
3. डॉ. महावीर अग्रवाल, मा0 प्रति-कुलपति, पतंजलि विश्वविद्यालय, हरिद्वार।
4. डॉ. सत्येन्द्र मित्तल, निदेशक- दूरस्थ शिक्षा, पतंजलि विश्वविद्यालय, हरिद्वार।
5. डॉ. प्रवीण पुनिया, कुलसचिव, पतंजलि विश्वविद्यालय।
6. डॉ. वी. के. कटियार, संकायाध्यक्ष- शिक्षण एवं शोध, पतंजलि विश्वविद्यालय।
7. डॉ0 साध्वी देवप्रिया जी, कुलानुशासिका, संकायाध्यक्ष-मानविकी एवं प्राच्य विद्या अध्ययन, विभागाध्यक्ष दर्शन विभाग, पतंजलि विश्वविद्यालय।
8. डॉ. ओमनारायण तिवारी, संकायाध्यक्ष- योग विज्ञान संकाय, पतंजलि विश्वविद्यालय।
9. डॉ. तोरण सिंह, संकायाध्यक्ष- प्राकृतिक चिकित्सा एवं योग विज्ञान संकाय, पतंजलि विश्वविद्यालय।
10. सीए रिचा भगत, वित्ताधिकारी, पतंजलि विश्वविद्यालय।
11. डॉ. ए. के. सिंह, परीक्षा नियंत्रक, पतंजलि विश्वविद्यालय।
12. डॉ. बिपिन कुमार दूबे, संकायाध्यक्ष- छात्र कल्याण, पतंजलि विश्वविद्यालय।
13. डॉ. निर्विकार, उपकुलसचिव, पतंजलि विश्वविद्यालय।
14. स्वामी आर्षदेव, कुलानुशासक, पतंजलि विश्वविद्यालय।
15. उपरोक्तानुसार समस्त सम्बन्धित को सूचनार्थ एवं आवश्यक कार्यवाही हेतु।
16. छात्रावास अधीक्षक/अधीक्षिका एवं सूचना पट्ट।
17. कार्यालय प्रति।

University of Patanjali, Haridwar

Accredited with CGPA of 3.48 at A+ Grade by NAAC

One Day National Conference on

The Role of Indian Philosophy in World Peace

On 18 Nov 2024

One-week Vocational Training Program on

Svāvalamban Svāsthya-Samrakṣan

From 18 Nov to 23 Nov 2024

10:00 AM – 11:30 AM	Inaugural session **Deepa-Prajvalanam** by Honourable Dignitaries **Kul Geet** – Students of UoP Welcome Note – Dr. Gowtham R **Inauguration of CSU funded projects** Inaugural Address by **Param Shraddheya Acharya Sri** Ashirvachanam by **Param Pujya Swami Ji Maharaj**
11:30 AM – 01:00 PM	Session 1 – **Dr. P. Narayan** Professor & HOD Dvaita Vedanta National Sanskrit University, Tirupati
01:00 PM – 02:00 PM	Prasad
02:00 PM – 03:00 PM	Session 2 – **Prof. Anitha Rajpal** Hindu College University of Delhi, New Delhi
03:00 PM – 04:00 PM	Session 3 – **Dr. Bhabitha Sharma** Senior Assistant Professor Kanya Gurukul Campus Gurkul Kangari University, Haridwar
04:00 PM – 04:10 PM	Refreshment Break
04:10 PM – 04:30 PM	Valedictory session Vote of Thanks – **Prof. Sadhvi Devpriya**

राष्ट्रीय संगोष्ठी

(18 November 2024)

दर्शन एवं संस्कृत विभाग

पतंजलि विश्वविद्यालय के दर्शन एवं संस्कृत विभाग के संयुक्त तत्वावधान में 'विश्व शांति में भारतीय दर्शनों का योगदान' विषय पर दिनांक 18 नवम्बर 2024 को एक राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इस संगोष्ठी की अध्यक्षता कुलपति श्रद्धेय आचार्य श्री बालकृष्ण जी ने की। मुख्य संरक्षिका प्रो. साध्वी देवप्रिया और मुख्य अतिथि राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय तिरूपति के प्रो.नारायण पी. तथा विशिष्ट अतिथि हिन्दू महाविद्यालय, दिल्ली की डॉ. अनीता राजपाल और गुरूकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय की डॉ बबीता शर्मा ने अपने विचार व्यक्त किये।

इस अवसर पर आचार्य श्री ने कहा कि वर्तमान समय में युद्ध जैसी विभीषिका क्रोध और अवसाद जैसी समस्यायें उत्पन्न हो रही है जिसका कारण भारतीय ऋषि-मुनियों के ज्ञान से समस्त संसार का अवगत नही होना है, अत: विश्व शांति के लिए सभी को भारतीय दर्शन से अवगत होना अत्यन्त आवश्यक है। मनुष्य के अंदर यदि अशांति व्याप्त है तो वह केवल मनुष्य ही नही बल्कि उसकी समस्त परिधि को अशांत करती है। मनुष्य के अंदर स्वयं की शांति होने से ही वह शांतिपूर्ण परिवार और समाज का निर्माण करता है, जिसके क्रमिक विकास से राष्ट्र और विश्व में शांति स्थापित होती है। प्रत्येक मनुष्य यदि भारतीय दर्शन परम्परा के अनुरुप जीवन जीना प्रारम्भ कर दे तो विश्व अपने आप ही शांतिमय बन जायेगा।

मुख्य अतिथि प्रो. नारायण पी. ने कहा कि वर्तमान में विश्व अशांत है इसलिए हम आज विश्व शांति हेतु भारतीय दर्शनों की उपयोगिता पर विचार कर रहे है। उन्होंने बताया कि मनुष्य इसीलिए कष्ट में है क्योंकि वह संगति में लीन है यहाँ संगति कई बार कष्ट का हेतु बन जाता है, जैसे हम किसी चीज को अपना मानते हैं तो उसको हुआ कष्ट हमें प्रतीत

होने लगता है। इसीलिए हमें असंगत का आश्रय लेना चाहिए असंगत (अ = परमात्मा) अर्थात् परमात्मा से संगति। परमात्मा की संगति से हमारे अंदर अभिमान नहीं रहेगा। उपनिषदों में वर्णित है कि परमात्मा ने ही समस्त सृष्टि की रचना की है और उसमें प्रविष्ट हो गये हैं, अत: यदि हम सम्पूर्ण सृष्टि को परमात्मा स्वरूप अनुभव करें तो हम सुख-दुख से प्रभावित नही होंगे। उन्होने यह भी कहा कि विश्व शांति के निमित्त हमें परमात्मा में तीन तत्वो यथा द्रव्य, ज्ञान और कर्म का समर्पण आवश्यक है। परमात्मा में इनके अर्पण से मानसिक और वैश्विक शांति स्थापित होगी।

संगोष्ठी में हिन्दू महाविद्यालय की प्रो. अनीता राजपाल जी ने योगदर्शन से लेकर वेद, उपनिषद, मनुस्मृति, जैन एवं बौद्ध दर्शन आदि के अनेक संदर्भो को उजागर करते हुए मैत्री, करूणा, मुदिता एवं उपेक्षा आदि पर विशद व्याख्यान दिया जिसमे परस्परता के साथ-साथ विश्व शांति का संदेश निहित है। वही डॉ. बबीता शर्मा ने विश्व शांति में भारतीय अहम दर्शनों की भूमिका पर विशद् प्रकाश डाला।

इस संगोष्ठी में प्रति-कुलपति प्रो. मंयक अग्रवाल, ओडीएल के निदेशक प्रो. सत्येन्द्र मित्तल, कुलसचिव डॉ. प्रवीण पूनिया, डॉ. मनोहर लाल आर्य, डॉ. स्वामी परमार्थदेव, स्वामी आर्षदेव, प्रो. के.एन.एस यादव, प्रो. ए.के.सिंह, प्रो. ओमनारायण तिवारी, डॉ. गणेश पाड्ंया, डॉ. प्रज्ञानदेव, डॉ.सांवर सिंह, डॉ. वैशाली, डॉ. अलका, डॉ भागीरथी आदि उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन डॉ गौतम आर. और संयोजन आचार्य बद्रीनाथ बल्लेरी ने किया।

संगोष्ठी में पोस्टर प्रदर्शनी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें प्रथम स्थान झरना एवं लिकेश्वर द्वितीय स्थान स्वामी भवदेव, शिवकैलाश, वरदान तथा तृतीय स्थान स्वामी विज्ञानदेव, स्वामी विरक्तदेव, पूनीता एवं रूपल ने प्राप्त किया।

संलग्न कार्यविवरण सूची

हिन्दुस्तान
देहरादून, मंगलवार, 19 नवंबर 2024 05

पतंजलि विश्वविद्यालय में विश्व शांति में भारतीय दर्शन के योगदान विषय पर गोष्ठी आयोजित

भारतीय दर्शन को जानना जरूरी: आचार्य

आह्वान

हरिद्वार, संवाददाता। 'आचार्य बालकृष्ण ने कहा कि वर्तमान समय में क्रोध और अवसाद जैसी समस्याएं उत्पन्न हो रही है। इसका कारण भारतीय ऋषि-मुनियों के ज्ञान से अवगत नहीं होना है। अतः विश्व शांति के लिए सभी को भारतीय दर्शन से अवगत होना आवश्यक है।

उन्होंने कहा कि मनुष्य के अंदर यदि अशांति व्याप्त है तो वह केवल मनुष्य ही नही बल्कि उसकी समस्त परिधि को अशांत करती है। मनुष्य के अंदर स्वयं की शांति होने से ही वह शांतिपूर्ण परिवार और समाज का निर्माण करता है, जिसके क्रमिक विकास से राष्ट्र और विश्व में शांति स्थापित होती है। प्रत्येक मनुष्य भारतीय दर्शन परम्परा के अनुरुप जीवन जीना प्रारम्भ कर दे तो विश्व अपने आप ही शांतिमय बन जायेगा। पतंजलि विवि के दर्शन एवं संस्कृत विभाग के संयुक्त तत्वावधान में विश्व शांति में भारतीय दर्शनों का योगदान विषय पर एक राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इस संगोष्ठी की अध्यक्षता कुलपति आचार्य बालकृष्ण ने की। मुख्य संरक्षिका प्रो. साध्वी देवप्रिया और मुख्य अतिथि राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय तिरूपति के प्रो नारायण पी और विशिष्ट अतिथि हिन्दू महाविद्यालय, दिल्ली की डॉ. अनीता राजपाल और गुरूकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय की डॉ बबीता शर्मा ने अपने विचार व्यक्त किये।

मुख्य अतिथि प्रो नारायण पी ने कहा कि वर्तमान में विश्व अशांत है। इसलिए हम आज विश्व शांति हेतु भारतीय दर्शनों की उपयोगिता पर विचार कर रहे है। उन्होंने बताया कि मनुष्य इसीलिए कष्ट में है क्योंकि वह संगति में लीन है यहाँ संगति कई बार कष्ट का हेतु बन जाता है, जैसे हम किसी चीज को अपना मानते हैं तो उसको हुआ कष्ट हमें प्रतीत होने लगता है। इसीलिए हमें असंगत का आश्रय लेना चाहिए असंगत (अ = परमात्मा) अर्थात् परमात्मा से संगति। परमात्मा की संगति से हमारे अंदर अभिमान नहीं रहेगा।

उपनिषदों मे वर्णित है कि परमात्मा ने ही समस्त सृष्टि की रचना की है और उसमें प्रविष्ट हो गये हैं, अतः यदि हम सम्पूर्ण सृष्टि को परमात्मा स्वरूप अनुभव करें तो हम सुख-दुख से प्रभावित नही होंगे। उन्होने यह भी कहा कि विश्व शांति के निमित्त हमें परमात्मा में तीन तत्वो यथा द्रव्य, ज्ञान और कर्म का समर्पण आवश्यक है। परमात्मा में इनके अर्पण से मानसिक और वैश्विक शांति स्थापित होगी। संगोष्ठी में प्रति-कुलपति प्रो. मंयक अग्रवाल, ओडीएल के निदेशक प्रो. सत्येन्द्र मित्तल, कुलसचिव डॉ. प्रवीण पूनिया, डॉ. मनोहर लाल आर्य, डॉ. स्वामी परमार्थदेव आदि उपस्थित रहे।

हरिद्वार में सोमवार को पतंजलि विश्वविद्यालय में आयोजित राष्ट्रीय कार्यशाला का शुभारंभ करते अतिथि। • हिन्दुस्तान

स्वास्थ्य सेवा में पतंजलि की अग्रणी भूमिका

हरिद्वार, संवाददाता। पतंजलि विवि के कुलपति आचार्य बालकृष्ण ने कहा कि स्वास्थ्य संरक्षण में पतंजलि विवि की अग्रणी भूमिका है। उन्होंने यह बातें पतंजलि विवि के दर्शन और संस्कृत विभाग की ओर से स्वास्थ्य संरक्षण विषय पर .सात दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला का उदघाटन कर कही।

मुख्य संरक्षिका प्रो. साध्वी देवप्रिया, मुख्य अतिथि राष्ट्रीय संस्कृत विवि तिरुपति के प्रो. नारायण पी, विशिष्ट अतिथि हिन्दू महाविद्यालय दिल्ली की डॉ. अनीता राजपाल और गुरुकुल कांगड़ी विवि की डॉ. बबीता शर्मा ने भी विचार व्यक्त किए। संयोजक डॉ. गौतम आर ने बताया कि कार्यशाला में संस्कृत विवि देवप्रयाग से 20 तथा पतंजलि के 60 विद्यार्थी भाग ले रहे हैं। उन्हें स्वयं को स्वस्थ रखने के लिए योग, आयुर्वेद, प्राकृतिक चिकित्सा, एक्युप्रेशर आदि तकनीकों का प्रयोग सिखाया जायेगा। बताया कि तीन प्रोजेक्ट प्राप्त हुए। इनमें प्रो. साध्वी देवप्रिया के मार्गदर्शन में 'संस्कृत, आयुर्वेद, योग और तंत्र विज्ञान के पाठ्यक्रम समायोगी, डॉ. गौतम के निर्देशन में संस्कृत पाठ्यक्रम तथा डॉ., स्वामी परमार्थदेव के निर्देशन में कोरोना उत्तर तथा वैश्विक समस्याओं के समाधान में उपनिषदों की भूमिका शामिल है। इसमें प्रति कुलपति प्रो. मयंक अग्रवाल, प्रो. सत्येन्द्र मित्तल, कुलसचिव डॉ. प्रवीण पूनिया, डॉ. मनोहर लाल, डॉ. स्वामी परमार्थदेव, स्वामी आर्षदेव, प्रो. केएनएस यादव, प्रो. एके सिंह, प्रो. ओमनारायण तिवारी, डॉ. गणेश पाड्या, डॉ. प्रज्ञानदेव, डॉ. सांवर सिंह, डॉ. वैशाली, डॉ. अलका, डॉ. भागीरथी आदि उपस्थित रहे।

2 दैनिक जागरण देहरादून/हरिद्वार, 19 नवंबर 2024

मनुष्य की जागृत चेतना से ही विश्व शांति संभव

जागरण संवाददाता, हरिद्वार: पतंजलि विश्वविद्यालय के दर्शन और संस्कृत विभाग की ओर से 'विश्व शांति में भारतीय दर्शनों का योगदान' विषय पर आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी में आचार्य बालकृष्ण ने कहा कि वर्तमान समय में युद्ध जैसी विभीषिका क्रोध और अवसाद जैसी समस्याएं उत्पन्न हो रही है। जिसका कारण भारतीय ऋषि-मुनियों के ज्ञान से समस्त संसार का अवगत नहीं होना है। इसलिए विश्व शांति को सभी को भारतीय दर्शन से अवगत होना अत्यंत आवश्यक है।

मनुष्य के अंदर यदि अशांति व्याप्त है तो वह केवल मनुष्य ही नहीं बल्कि उसकी समस्त परिधि को अशांत करती है। मनुष्य के अंदर स्वयं की शांति होने से ही वह शांतिपूर्ण परिवार और समाज का निर्माण करता है। जिसके क्रमिक विकास से राष्ट्र और विश्व में शांति स्थापित होती है। प्रत्येक मनुष्य यदि भारतीय दर्शन परंपरा के अनुरूप जीवन जीना प्रारंभ कर दे तो विश्व अपने आप ही शांतिमय बन जाएगा। मुख्य अतिथि प्रो. नारायण पी ने कहा कि वर्तमान में विश्व अशांत है, इसलिए हम आज विश्व शांति के लिए भारतीय दर्शनों की उपयोगिता पर विचार कर रहे हैं। उन्होंने बताया कि मनुष्य इसलिए कष्ट में है क्योंकि वह संगति में लीन है। यहां संगति कई बार कष्ट का कारण बन जाता है। जैसे हम किसी चीज को अपना मानते हैं तो उसको हुआ कष्ट हमें प्रतीत होने लगता है। इसलिए हमें असंगत का आश्रय लेना चाहिए। असंगत (अ = परमात्मा) अर्थात् परमात्मा से संगति। परमात्मा की संगति से हमारे अंदर अभिमान नहीं रहेगा। उपनिषदों में वर्णित है कि परमात्मा ने ही समस्त सृष्टि की रचना की है और उसमें प्रविष्ट हो गए हैं। इसलिए यदि हम संपूर्ण सृष्टि को परमात्मा स्वरूप अनुभव करें तो हम सुख-दुख से प्रभावित नहीं होंगे। संगोष्ठी में हिंदू महाविद्यालय की प्रो. अनीता राजपाल ने योगदर्शन से लेकर वेद, उपनिषद, मनुस्मृति, जैन और बौद्ध दर्शन के अनेक संदर्भों को उजागर करते हुए मैत्री, करुणा, मुदिता और उपेक्षा आदि पर विशद व्याख्यान दिया। डा. बबीता शर्मा ने विश्व शांति में भारतीय अहम दर्शनों की भूमिका पर प्रकाश डाला। संगोष्ठी में प्रति कुलपति प्रो. मयंक अग्रवाल, ओडीएल के निदेशक प्रो सत्येंद्र मित्तल, कुलसचिव डा. प्रवीण पूनिया, डा मनोहर लाल आर्य, डा स्वामी परमार्थदेव, स्वामी आर्षदेव, प्रो केएनएस यादव, प्रो एके सिंह, प्रो ओमनारायण तिवारी, डा गणेश पंड्या, डा प्रज्ञानदेव, डा सांवर सिंह, डा वैशाली, डा अलका, डा भागीरथी आदि उपस्थित रहे।

पतंजलि विश्वविद्यालय के दर्शन और संस्कृत विभाग की ओर से 'विश्व शांति में भारतीय दर्शनों का योगदान' विषय पर आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी को संबोधित करते आचार्य बालकृष्ण • साभार पतंजलि

पोस्टर प्रतियोगिता का आयोजन

संगोष्ठी में पोस्टर प्रदर्शनी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। जिसमें प्रथम स्थान दर्शन विभाग की झरना और शोध छात्र लिकेश्वर, द्वितीय स्थान स्वामी भवदेव, शिव कैलाश और वरदान और तृतीय स्थान स्वामी विज्ञानदेव, पुनीता, रूपल और स्वामी वीरभद्रदेव ने प्राप्त किया।

University of Patanjali

University of Patanjali
Accredited with CGPA of 3.48 at A+ Grade by NAAC
Department of Philosophy
Department of Sanskrit
Organize
One-day National Conference on
The Role of Indian Philosophy in World Peace
One-week Vocational Training Program on
Svāvalaṃban Svāsthya-Saṃrakṣan
Inauguration of three Ashtaadashi Projects
Samāyogi: Language model for Yoga & Ayurveda
Saṁskṛta-śikṣaṇam: Evening course in Sanskrit
Role of Upanishads in solving globle problems

University of Patanjali
Department of Philosophy
Department of Sanskrit
Organize

University of Patanjali

University of Patanjali
Department of Philosophy
Department of Sanskrit
Organize

University of Patanjali

University of Patanjali
Department of Philosophy
Department of Sanskrit
Organize
The Role of Indian Philosophy in World Peace
Svāvalamban Svāsthya-Saṃrakṣan
Central Sanskrit University, New Delhi
Date : 18 November 2024 Monday
University of Patanjali, Haridwar